भारत और चेक गणराज्य संबंध

भारत और चेक गणराज्य के बीच संबंधों की जड़ें बहुत गहरी हैं। चेक इंडोलॉजिस्ट मिलोस्लाव क्रासा के अनुसार "यदि और पहले से नहीं, तो निश्चित रूप से 9वीं एवं 10वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में एशियाई बाजारों से चेक भूमि तक स्थली एवं समुद्री व्यापार मार्ग मौजूद थे जिनसे होकर पूरब से बहुमूल्य माल, जिसमें दुलर्भ भारतीय मसाले शामिल हैं, इस देश में पहुंचता था"। दोनों देशों के बीच संबंध आने वाली शताब्दियों में निरंतर सुदृढ़ होता रहा तथा शिक्षाविदों, कलाकारों, कारोबारियों एवं राजनीतिक नेताओं के परस्पर दौरे अक्सर होते रहे हैं। भारत के ज्ञान को उपलब्ध एवं सुगम बनाकर चेक गणराज्य के विद्वान चेक इंडोलॉजी के संस्थापकों की लंबी परंपरा को जारी रख रहे हैं, जो 1918 में स्वतंत्र चेकोस्लोवाकिया के गठन के बाद विशेष रूप से तथा इससे पहले से चली आ रही है। भारत के बारे में सीखने तथा भारत और चेकोस्लाविया के बीच संपर्क स्थापित करने की व्यापक प्रक्रिया को प्राग तथा चेकोस्लाविया के अन्य शहरों में प्रमुख भारतीय विद्वानों, पत्रकारों, राजनेताओं एवं कलाकारों की अक्सर यात्राओं से सुगम एवं सुदृढ़ हुई है। द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि से विशेष रूप से मुंबई में 1920 में और इसके बाद कोलकाता में चेकोस्लावाक कांसुलेट खुलने के बाद अंतर वैयक्तिक संपर्क की संभावनाएं और बढ़ गईं। इस प्रकार, एक समूह के लोगों के लिए एक रास्ता खुला, जिसमें न केवल पेशेवर हित जुड़े, अपितु परस्पर सहानुभूति तथा मैत्री भी इसकी उपज है।

पूर्व चेकोस्लोवाकिया के साथ तथा चेक गणराज्य के साथ भारत के संबंध हमेशा गर्मजोशीपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण रहे हैं। गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने 1821 एवं 1926 में चेकोस्लोवाकिया का दौरा किया था। टैगोर के नाम पर प्राग में एक अनन्य आवासीय क्षेत्र में टैगोर की आवक्ष प्रतिमा लगाई गई है। 1933 से 1938 के बीच जिस भारतीय नेता ने चेकोस्लोवाकिया का सबसे अधिक बार दौरा किया वह नेता जी सुभाष चन्द्र बोस थे। उन्होंने 1934 में प्राग में भारत - चेक संघ की स्थापना की तथा विदेश मंत्री और राष्ट्रपति के रूप में कई बार एडवर्ड बेनेस से मिले। अपनी बेटी इंदिरा गांधी के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 1938 में प्राग का दौरा किया था तथा इसके बाद भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन द्वारा 1938 की म्युनिख संधि की जोरदार निंदा को प्रभावित किया था।

चेकोस्लोवाकिया के साथ 18 नवंबर, 1947 को राजनयिक संबंध स्थापित किए गए। राष्ट्रपति डा. एस राधाकृष्णन, राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह और राष्ट्रपति आर वैंकटरमण ने क्रमश: 1965, 1983 और 1988 में चेकोस्लोवाकिया का दौरा किया। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 1955 में चेकोस्लोवाकिया का दौरा किया तथा प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अगस्त, 1972 में और राजीव गांधी ने अगस्त, 1986 में चेकोस्लोवाकिया का दौरा किया। नवंबर, 1990 में वेलवेट क्रांति के बाद विदेश मंत्री जिरी डिनस्टेबिर की यात्रा उच्च स्तर पर पहला संपर्क था। भारत के विदेश राज्य मंत्री आर एल भाटिया सी एस एफ आर के विघटन के बाद चेक गणराज्य का दौरा करने वाले पहले गैर यूरोपीय मंत्री थे।

1 जनवरी, 1993 को चेकोस्लोवाकिया के विभाजन के बाद चेक गणराज्य के अस्तित्व में आने पर उच्च स्तरीय यात्राएं होती रही हैं। भारत की ओर से की गई यात्राओं के तहत निम्नलिखित शामिल है – राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने अक्टूबर, 1996 में चेक गणराज्य का दौरा किया; विदेश राज्य मंत्री श्री उमर अब्दुल्ला ने फरवरी, 2002 में चेक गणराज्य का दौरा किया; भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्री श्री बाबा साहेब विखे पाटिल ने सितंबर, 2002 में; विद्युत मंत्री अनंतगीते ने 2003 में; रक्षा मंत्री श्री जार्ज फर्नांडीज ने अक्टूबर, 2003 में, विदेश राज्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने सितंबर, 2003 में, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री कमलनाथ और विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने सितंबर, 2008 में चेक गणराज्य का दौरा किया। विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा ने जून, 2009 में चेक गणराज्य का दौरा किया। उप राष्ट्रपति श्री एम हामिद अंसारी ने जून, 2010 में, एयर चीफ मार्शल पी वी नाइक, चेयरमैन, चीफ

ऑफ स्टाफ कमेटी ने नवंबर, 2010 में और कोयला मंत्री श्री श्रीप्रकाश जैयसवाल ने जून, 2011 में, वाणिज्य, उद्योग एवं कपड़ा मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 9 से 12 सितंबर, 2012 के दौरान तथा विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने अक्टूबर – नवंबर, 2012 में चेक गणराज्य का दौरा किया।

चेक गणराज्य की ओर से की गई यात्राओं के तहत निम्नलिखित शामिल है – राष्ट्रपति वाक्लाव हवेल ने फरवरी, 1994 में भारत का दौरा किया (उन्होंने दो प्रतिष्ठित भारतीय पुरस्कार प्राप्त किए (i) इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार (फरवरी, 1994 में अपनी राजकीय यात्रा के दौरान); (ii) जनवरी, 2004 में महात्मा गांधी शांति पुरस्कार); प्रधानमंत्री मिलोस जेमान ने मार्च, 2001 में; उद्योग एवं व्यापार मंत्री श्री व्लादिमीर दलौहली ने मार्च, 1993 में; विदेश मंत्री जोसफ जेलेनीक ने जून, 1993 में; व्यापार एवं उद्योग मंत्री डा. करेल क्यूहनी ने अक्टूबर, 1997 में; रक्षा मंत्री श्री व्लादिमीर वेत्ची ने फरवरी, 2001; उद्योग एवं व्यापार मंत्री श्री मिरोस्लाव ग्रेगर ने मार्च, 2001 में; वित्त मंत्री श्री पावेल मर्टिलिक ने मार्च, 2001 में; कृषि मंत्री श्री जॉन फेंकल ने मार्च, 2001 में; व्यापार एवं उद्योग मंत्री श्री जिरी रसनोक ने अगस्त, 2002 एवं फरवरी, 2003 मे; रक्षा मंत्री श्री जेरोस्लाव तवर्डिक ने फरवरी, 2003 में; उप प्रधानमंत्री एवं परिवहन मंत्री श्री मार्टिन सिमोनोवस्की ने फरवरी, 2005 में भारत का दौरा किया। राष्ट्रपति वाक्लाव क्लाउस ने नवंबर, 2005 में भारत का राजकीया दौरा किया। प्रधानमंत्री जिरी पैरावबेक ने जनवरी,2006 में भारत का दौरा किया। विदेश मंत्री कारेल शिवारजेनबर्ग ने 2007 में भारत का दौरा किया। व्यापार एवं उद्योग मंत्री मार्टिन रिमन ने नवंबर, 2008 में भारत का दौरा किया। चेक संसद की सीनेट के अध्यक्ष श्री मिलान स्टेच ने मई, 2011 में भारत का दौरा किया।व्यापार एवं उद्योग मंत्री मार्टिन कोकुरेक के नेतृत्व में एक व्यापार शिष्टमंडल ने अक्टूबर, 2011 में भारत का दौरा किया जिसमें चेक संसद की आर्थिक कार्य समिति के अध्यक्ष श्री मिलान उर्बान शामिल थे। विदेश मंत्री जॉन कोहोटैंड, संस्कृति मंत्री जिरी बाल्विन ने नंवबर, 2013 में भारत का दौरा किया उनके साथ एक व्यापार शिष्टमंडल भी आया था जिसमें 25 चेक कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल थे। उप विदेश मंत्री टामस डब ने फरवरी, 2014 के पहले सप्ताह में भारत का दौरा किया तथा 10 फरवरी राज्य मंत्री (पी के) से मुलाकात की। उन्होंने 4 फरवरी, 2014 को वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री एस नाचिप्पन से भी मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने राज्य मंत्री (पी के) से मुलाकात की तथा इस बात को दोहराया कि चेक गणराज्य एशिया में भारत को एक महत्वपूर्ण साथी के रूप में मानता है। आर्थिक सहयोग पर संयुक्त आयोग की 10वीं बैठक में भाग लेने के लिए उद्योग एवं व्यापार मंत्री श्री जान मलाडेक ने 28 से 30 जनवरी 2015 के दौरान भारत का दौरा किया।

वर्ष 2012 से द्विपक्षीय व्यापार बढ़कर एक मिलियन अमरीकी डालर से अधिक हो गया है। 2012 के दौरान, चेक गणराज्य को भारतीय निर्यात का मूल्य 581.80 मिलियन अमरीकी डालर था जबकि भारतीय आयात का मूल्य 517.72 मिलियन अमरीकी डालर था। दोनों देशों ने व्यापार एवं कारोबार शिष्टमंडलों के अक्सर आदान – प्रदान के माध्यम से आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयास किया है। वर्ष 2013 में, आर्थिक संबंध के हमारे लंबे इतिहास में पहली बार द्विपक्षीय व्यापार का संतुलन भारत के पक्ष में झुका। भारतीय निर्यात जो वर्ष 2012 में 656.308 मिलियन अमरीकी डालर के चेक आयात के विरूद्ध 596.003 मिलियन अमरीकी डालर था, वह वर्ष 2013 में 566.127 मिलियन अमरीकी डालर के चेक निर्यात के विरूद्ध 630.127 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया तथा भारतीय निर्यात में 5.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 2014 में भी यह रुझान जारी रही तथा भारतीय निर्यात में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो 588.889 मिलियन अमरीकी डालर के विरुद्ध 692.564 मिलियन अमरीकी डालर था, इस प्रकार द्विपक्षीय व्यापार 1281.453 मिलियन अमरीकी डालर था जो पिछले वर्ष की तुलना में 6.4 प्रतिशत अधिक है। तथापि जनवरी से नवंबर 2015 तक, द्विपक्षीय व्यापार में 7.4 प्रतिशत की गिरावट आई है तथा यह 1122.880 मिलियन अमरीकी डालर है। 623.301 मिलियन अमरीकी डालर के चेक निर्यात के विरुद्ध भारतीय निर्यात 499.579 मिलियन अमरीकी डालर था।

भारतीय कंपनियों ने आईटी, वाहन, चाय, कपड़ा, भेषज पदार्थ, आटो कंपोनेंट जैसे क्षेत्रों में चेक गणराज्य में निवेश किया है। इंफोसिस, अशोक लिलैंड, टाटा टी, आलोक इंडस्ट्रीज, स्पेंटेक्स इंडस्ट्रीज, मदर्सन सुमी सिस्टम लिमिटेड, ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल, लॉयड ग्रुप, लॉयड इलेक्ट्रिक एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड, पी एम पी कंपोनेंट्स लिमिटेड जैसी भारतीय कंपनियों ने चेक गणराज्य में निवेश किया है। स्कोडा आटो, स्कोडा पावर एंड टाट्रा के मूल निवेश का अनुसरण करते हुए मशीनरी, परिवहन, विद्युत एवं आटोमोटिव जैसे क्षेत्रों में भारत में अनेक नई एवं संभावित चेक निवेश परियोजनाएं हैं।

अक्टूबर, 1998 में, दोहरा कराधान परिहार करार पर हस्ताक्षर किया गया। जून, 2010 में भारत के उप राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान भारत और चेक गणराज्य के बीच एक सामाजिक सुरक्षा करार तथा बी आई पी पी ए करार में संशोधन के लिए प्रोटोकॉल तथा आर्थिक सहयोग के लिए करार पर भी हस्ताक्षर किया गया।

वर्ष 1991 तक भारत और चेक गणराज्य के बीच सीधी उड़ानें थी तथा चेक एयरलाइंस की एक सीधी उड़ान मुंबई की हुआ करती थी (एयर इंडिया की एक फ्लाइट ने 1971 तक प्राग को टच किया था)। 1997 में एक द्विपक्षीय हवाई सेवा करार पर हस्ताक्षर किया गया। सीधा हवाई संपर्क स्थापित करने में कोई प्रगति नहीं हुई है।

संस्कृति, शिक्षा एवं विज्ञान में सहयोग के लिए एक करार को राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा की यात्रा के दौरान 1996 में निष्पादित किया गया। चेक गणराज्य की शैक्षिक संस्थाएं – विशेष रूप से तकनीकी विश्वविद्यालय एवं चिकित्सा कॉलेज – समकक्ष भारतीय संस्थाओं के साथ विनिमय कार्यक्रमों की इच्छुक हैं; वे अधिक संख्या में भारतीय छात्रों को आकर्षित भी करना चाहती हैं जो स्नातक एवं स्नात्कोत्तर अध्ययन के लिए विदेश जाते हैं। शैक्षिक एवं वैज्ञानिक आदान – प्रदान के क्षेत्र में एक सतत सहयोग है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सी एस आई आर) तथा चेक विज्ञान अकादमी ने सहयोग के लिए करार किया है। चेक विज्ञान अकादमी ने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आई एन एस ए) के साथ भी सहयोग के लिए करार किया है।

इंडोलॉजी प्राग में बहुत पुरानी परंपरा है तथा 1850 में प्रतिष्ठित चार्ल्स विश्वविद्यालय ने एक संस्कृत चेयर की स्थापना की गई थी। 1920 में बांबे में चेकोस्लावाकिया का पहला कांसुल एक इंडोलाजिस्ट ओटाकर परटोल्ड था। दो विश्व युद्धों के बीच की अवधि में विंसेन लेंसी के मार्गदर्शन में भारतीय अध्ययनों का बहुत तेजी से विस्तार हुआ। जो रवींद्रनाथ टैगोर के एक व्यक्तिगत मित्र थे। चार्ल्स विश्वविद्यालय ने भारतीय अध्ययन संस्थान में ऐसे अनेक छात्र हैं जो भारतीय भाषाओं (मुख्य रूप से संस्कृत, तमिल, हिंदी और बंग्ला), साहित्य, इतिहास एवं संस्कृति में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्राच्य संस्थान जिसका गठन 1922 में चेक विज्ञान अकादमी के तत्वावधान में किया गया, में भारतीय भाषाओं, साहित्य, इतिहास, संस्कृति, राजनीतिक आदि में अनुसंधान की एक लंबी पंरपरा रही है। प्रख्यात चेक इंडोलॉजिस्ट प्रोफेसर दुसान जेबाविटल जिन्होंने संस्कृत की 60 कृतियों का अनुवाद किया, जिसमें उपनिषद भी शामिल हैं, को चेक गणराज्य में इंडोलॉजी के लिए उनके योगदान के लिए जनवरी, 2006 में पद्म भूषण पुरस्कार से नवाजा गया। प्रोफेसर दुसान जेबिविटल का अगस्त, 5 में प्राग में निधन हो गया। भारत में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए चेक गणराज्य के छात्रों को पांच आई टी ई सी छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं।

चेक गणराज्य में भारतीय समुदाय की संख्या 1800 के आसपास है। इनमें से कुछ चेक गणराज्य के नागरिक हैं तथा स्थानीय निवासियों से शादी कर ली है, जबकि दूसरे लोग दीर्घ अवधि के निवास परमिट या स्थाई आवास परमिट पर रह रहे हैं। इनमें से अनेक व्यावसायिक हैं जो आर्सेलर मित्तल,

सिटीबैंक, आई बी एम, हनीवेल, माइक्रोसाफ्ट तथा डी एच एल जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ काम कर रहे हैं। इंफोसिस एवं एविया अशोक लिलैंड जैसी भारतीय कंपनियों ने भी भारतीय पेशेवरों को रोजगार दिया हुआ है। तकरीबन 200 भारतीय छात्र चेक गणराज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चिकित्सा, इंजीनियरिंग, विज्ञान की पढ़ाई कर रहे हैं और यह संख्या हर वर्ष लगातार बढ़ रही है। भारतीयों / भारतीय मूल के व्यक्तियों के अनेक औपचारिक संघ हैं जो दूतावास के सहयोग से होली / दिवाली के अवसर पर समारोह का आयोजन करते हैं। कुछ भारतीय अल्प समय के कारोबार / खुदरा व्यापार में भी लगे हुए हैं।

वर्ष 2011 के पूर्वार्ध में स्थापित भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र भारतीय सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने तथा प्रचार प्रसार करने के लिए चांसरी से काम कर रहा है, जैसे कि चांसरी के मल्टी पर्पज हाल से मूवी दिखाना, व्याख्यान देना, स्थानीय प्रतिभाओं तथा भारत तथा अन्य देशों से कलाकारों द्वारा अभिनय कला के कार्यक्रमों का आयोजन करना। इसके अलावा मल्टी पर्पज हाल का प्रयोग कथक, भरतनाट्यम, बालीवुड नृत्य की भारतीय शास्त्रीय नृत्य कक्षाओं तथा योग की कक्षाओं के लिए और स्थानीय अनुभवी नर्तकों एवं योग्य शिक्षकों को स्थान प्रदान करने के लिए किया जाता है। हाल के महीनों में दोनों देशों के बीच पर्यटन भी काफी गति से फल-फूल रहा है। प्राग के ऐतिहासिक स्थानों पर जुलाई, 2014 में एक बालीवुड फिल्म की शूटिंग से भी चेक गणराज्य के बारे में भारत में रूचि उत्पन्न हुई है तथा तब से भारतीय पर्यटकों की संख्या बढ़ गई है। चेक गणराज्य के नागरिकों के लिए भारत में गोवा तथा दक्षिण भारत के समुद्र तट सबसे लोकप्रिय टूरिस्ट डेस्टिनेशन हैं।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, प्राग की वेबसाइट :
http://wws.india.cz/
भारतीय दूतावास, प्राग का फेसबुक पेज :
https://www.facebook.com/EOIPRAGUE
इंडिया ग्लोबल – एआरआई एफ एम गोल्ड जो भारत तथा चेक गणराज्य संबंधों पर आधारित कार्यक्रम है:
http://www.youtube.com/watch?v=vKtRjl0A6ik

***

जनवरी, 2016